

नवम्बर 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20



सदा वर्तमान में रहना, उसी को ही अमरपद कहते हैं। हम वर्तमान में ऐसे के ऐसे ही रहते हैं।
ज्ञानी पुरुष कभी पुराने होते ही नहीं हैं। रोज नए के नए, फ्रेश ही लगते रहते हैं।
उनकी बात फ्रेश लगती है, उनका वर्तन फ्रेश लगता है।

कुआला लम्पुर (मलेशिया) : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 12 से 14 सितम्बर 2024



पर्य - सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 19 से 28 सितम्बर 2024



वर्ष : 20 अंक : 1

अखंड क्रमांक : 229

नवम्बर 2024

पृष्ठ - 28

दादावाणी

वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही

Editor : Dimple Mehta

© 2024

Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Multiprint

Opp. H B Kapadiya New High
School, At-Chhatral, Tal: Kalol,
Dist. Gandhinagar - 382729

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

5 साल

भारत : 1000 रुपये

वार्षिक

भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

संपादकीय

स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद ज्ञानी पुरुष परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने व्यवहार को संपूर्ण शुद्धतापूर्वक पूर्ण करने के लिए पाँच आज्ञा दी हैं। दादाश्री हमेशा कहते थे कि व्यवहार संबंधी ‘व्यवस्थित’ की आज्ञा, वह कितने ही जन्मों की हमारी खोज है, इस आज्ञा का पालन करने से हमेशा टेन्शन-चिंता रहित मुक्त जीवन जी सकते हैं। ‘व्यवस्थित’ एकजोक्त समझ लें तो इस तरफ केवलज्ञान हो जाए, ऐसा है। व्यवस्थित, बुद्धि से समझ में आए ऐसा नहीं है, दर्शन से समझ में आए ऐसा है। खुद अकर्ता हो जाए तो व्यवस्थित कर्ता है, वह समझ में आएगा। उसके बाद जगत् के तमाम संकल्प-विकल्पों का अंत आ जाएगा। व्यवस्थित यानी भूतकाल भूलकर, भविष्य को व्यवस्थित के ताबे सौंपकर निरंतर वर्तमान में रहना।

प्रस्तुत अंक में, व्यवस्थित की आज्ञा का यथार्थ रूप से पालन करने के लिए दादाश्री व्यवहार में होने वाले सामान्य उदाहरणों द्वारा वर्तमान में रहने की समझ देते हैं। वर्तमान में रहना यानी जिस समय जो चल रहा है, उसमें ही रहो। चाय पी रहे हो उस समय टेस्ट लेकर पीना, खाना खा रहे हो तो टेस्ट लेकर खाना। भूतकाल और भविष्य की चिंता होने से वर्तमान को भोग नहीं पाते, इसलिए वर्तमान में रहना है। अर्थात् ‘प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो।’ व्यवस्थित को यदि यथार्थ रूप से समझ लें तो आठ घंटे का काम एक घंटे में हो जाए, दर्शन इतना उच्च हो जाता है।

अपनी ‘अक्रम’ की सामायिक करते-करते वर्तमान काल को पकड़ना आता है। वर्तमान में रहना यानी खुद शुद्धात्मा है और चंदू के जो संयोग हैं, उन्हें खुद अलग देखकर वर्तमान में स्थिर रहें, वह बहुत बड़ी जागृति कही जाएगी। वर्तमान में रह पाए, वही शुद्ध उपयोग है। ज्ञाता-द्रष्टा के अलावा अन्य कोई वर्तमान में नहीं रह सकता। दादाश्री कहते थे कि हम कभी पुराने नहीं होते, हमेशा वर्तमान में आनंद में ही रहते हैं इसलिए हम फ्रेश लगते हैं। हमारे वाणी-वर्तन हमेशा फ्रेश लगते हैं।

वर्तमान बहुत सूक्ष्म चीज है। इस तरफ भूतकाल और उस तरफ भविष्य काल, इन दोनों के बीच सूक्ष्म भाग में वर्तमान होता है। उसे ‘ज्ञानी’ ही पकड़ सकते हैं। हममें और आपमें फर्क कितना है? हमने काल को वश में किया है। काल कैसे वश में होता है? भूतकाल विस्मृत हो गया, भविष्य काल ‘व्यवस्थित’ के हाथ में है इसलिए वर्तमान में रहो, उससे काल वश में होता है। वर्तमान में रहें, उन्हें ‘ज्ञानी’ कहा है भगवान ने! ‘वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही।’ जो चीज चली गई उसकी चिंता नहीं रही, आगे की इच्छा नहीं रही।

दादाश्री कहते थे कि मैं वर्तमान में रहता हूँ और आपको वर्तमान में रहना सिखाता हूँ। ज्ञान के बाद व्यवहार में जो संयोग मिलें, वहाँ व्यवस्थित की आज्ञा का यथार्थ रूप से पालन करने का पुरुषार्थ शुरु करके, प्रत्येक क्षण निरंतर वर्तमान में रहकर स्व-सुख का अनुभव करें, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

निरंतर वर्तमान में रहना, वह है व्यवस्थित

प्रश्नकर्ता : कल सत्संग में ऐसा आया था कि पाँच आज्ञाओं में से तीन व्यवहार की हैं और दो निश्चय की हैं, वह ज़रा समझना है। वह कैसे ?

दादाश्री : यानी शुद्धात्मा देखना और रिलेटिव में उसकी पैकिंग देखना, वे दोनों निश्चय स्वरूप हैं और अन्य तीन व्यवहारिक हैं। वे तीन व्यवहारिक और ये दो निश्चय। व्यवहार-निश्चय के साथ का अपना यह मार्ग है पूरा। मैं ऐसा नहीं कहता कि पाँचों आज्ञाओं का पालन करो। पाँच नहीं, पर एक का भी पालन हो तो भी बहुत हो गया। और आपको सिर्फ ऐसा तय रखना है, ‘पाँच आज्ञाओं का पालन करना है’। आपकी यह दृढ़ता एक दिन भी टूटनी नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपसे एक बात हुई थी कि ‘व्यवस्थित एट ए टाइम हाज़िर रहना चाहिए।’

दादाश्री : सारा ज्ञान, सभी पाँचों ही वाक्य हाज़िर रहने चाहिए। जो हाज़िर रहे, उसी को ज्ञान कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो हमारी ऐसी कौन सी भूल है जिससे एट ए टाइम हाज़िर नहीं रहता? फिर बाद में याद आता है? उसके बाद समभाव से निकाल होता है। इस बारे में हमें और अधिक जानना है।

दादाश्री : मूल चीज़ तो व्यवस्थित है यानी क्या कि अव्यवस्थित चला गया अब और यह व्यवस्थित रहा हुआ है। हमारी लाइफ में अब पूरा

व्यवस्थित रहा हुआ है। व्यवस्थित यानी भविष्य की चिंता नहीं करनी होती, भूतकाल को भूल जाना और निरंतर वर्तमान में रहना, वह है व्यवस्थित।

आगे जाकर भूख लगेगी या नहीं, आगे जाकर मर जाएँगे या नहीं, जीवित रह जाएँगे, बीमार पड़ेंगे या नहीं, आपको ऐसा कुछ भी सोचने की ज़रूरत नहीं है। व्यवस्थित ही है। उसमें आप बिल्कुल बदलाव नहीं कर सकते। इसलिए आप बस ज्ञान में रहो। जब बदलाव कर सकते थे तब यह ज्ञान नहीं था, तब तक आप बदलाव कर सकते थे। अब शुद्धात्मा हो गए, इसलिए बदलाव कर सको, ऐसे रहे नहीं।

अब, व्यवस्थित सभी लोगों के लिए नहीं है, जिन्हें अपना ज्ञान दिया हों, अक्रम विज्ञान दिया हों, उनके लिए व्यवस्थित है। क्रमिक मार्ग में व्यवस्थित नहीं है इसीलिए आपको तो व्यवस्थित इतना समझ लेना है कि अब कोई परेशानी नहीं रही। अब आप वर्तमान में पाँच आज्ञा का पालन करो बस और वर्तमान का काम करते रहो।

खुद अकर्ता तो व्यवस्थित कर्ता

प्रश्नकर्ता : सभी बातें करते हैं, लेकिन वर्तमान में रहना बहुत मुश्किल है।

दादाश्री : नहीं, नहीं अपने ज्ञान में बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। सबसे सरल है तो यह है। मुश्किल वह है, उल्टा वर्तन करना, वह। इसमें (वर्तमान में) नहीं बरतना, वह मुश्किल है। यह तो मैंने दिया है, इसमें रहना सहज है, सरल है,

सुगम है। कहे अनुसार रहना है और अपनी बुद्धि न लगाए तो बस बहुत हो गया। अपनी बुद्धि से यह सब रूका हुआ है।

बुद्धि ज़रा क्लेम (आपत्ति) उठाएगी, लेकिन आप उस बुद्धि से कहना कि अरे.. व्यवस्थित है। क्यों आड़ी-टेढ़ी हो रही है? बुद्धि से तो यह जगत् उत्पन्न हुआ है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अभी भी वह (बुद्धि का) सहारा ले लेते हैं न, दादा?

दादाश्री : उसकी तो मार पड़ेगी और क्या होने वाला है? बाकी अपना व्यवस्थित जो शब्द है न, वह तो सबको उड़ा दे, ऐसा है। 'व्यवस्थित' बुद्धि से समझ में आ सके ऐसा नहीं है, दर्शन से समझ में आए, ऐसा है। इस 'अक्रम विज्ञान' को जैसा है वैसा जाहिर किया है। यह 'व्यवस्थित' 'एक्जेक्ट' 'व्यवस्थित' है। 'खुद' अकर्ता रहे तो ऐसा समझ में आएगा कि 'व्यवस्थित' कर्ता है, तभी जगत् 'जैसा है वैसा' समझ में आएगा। 'व्यवस्थित' समझ में नहीं आएगा तब तक संकल्प-विकल्प नहीं जाएँगे, भय नहीं जाएगा, क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : यह अक्रम विज्ञान डायरेक्ट (सीधा) अकर्तापद में ही ले जाता है न?

दादाश्री : डायरेक्ट। अकर्तापद, उसे ही अक्रम कहते हैं। कर्तापद, उसे क्रम कहते हैं। जब तक कर्ता रहता है तब तक क्रम है। कर्ता खत्म हो गया तो अक्रम। इसीलिए अक्रम कहा जाता है न! कर्ता खुद है ही नहीं। 'व्यवस्थित' कर्ता है। यह ज्ञान हमने निरावृत किया है इसीलिए इसे 'लिफ्ट मार्ग' कहते हैं! जो हो गया, वह व्यवस्थित। जो होना है, वह भी व्यवस्थित। आपको तो वर्तमान में रहना है। हाथ में जो काम आया हो, उसे करते रहना है, वर्तमान में।

हो जाने के बाद 'व्यवस्थित' कहा जाता है

प्रश्नकर्ता : हमें भविष्य काल की चिंता होने लगे कि 'यह ऐसा हो जाएगा, उससे तो ऐसा हो तो अच्छा।' तो फिर ऐसे समय में ऐसा नहीं कह सकते कि 'व्यवस्थित' में होना होगा वैसा होगा, तू किसलिए चिंता करता है?

दादाश्री : 'व्यवस्थित' के अर्थ में ऐसा नहीं कह सकते कि 'जो होना होगा वह होगा, कोई हर्ज नहीं है। जैसा होना होगा वैसा ही होगा,' ऐसा नहीं कह सकते। वह तो एकांतिक वाक्य कहलाएगा। उसे दुरुपयोग करना कहा जाएगा। ये मन, बुद्धि वगैरह अज्ञ स्वभाव के हैं और जब तक विरोधी हैं, तब तक हमें जाग्रत रहना पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : तो यह 'व्यवस्थित' बहुत कमज़ोर शब्द है। क्योंकि कई जगह पर बहुत दुरुपयोग हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, यदि इसका दुरुपयोग हो जाए तो कमज़ोर शब्द कहा जाएगा और सदुपयोग हो तो व्यवस्थित जैसी कोई चीज़ नहीं है! और फिर व्यवस्थित का मूल अर्थ तो अलग ही है।

अपना कोई रिश्तेदार बीमार हो, नज़दीकी रिश्तेदार और फिर कोई ब्राह्मण कहे कि, 'इनके ग्रह अच्छे नहीं हैं। लगता नहीं है कि ये जीएँगे।' ऐसी बात आपने सुनी हो और फिर दादा का 'व्यवस्थित' याद आ जाए कि 'व्यवस्थित में जो होगा वही होगा।' तो अपनी तरफ से इलाज बंद हो जाएगा, अपने हाथ कमज़ोर पड़ जाएँगे। इस तरह व्यवस्थित का दुरुपयोग करेंगे तो इलाज करने का अपना जो उल्लास था वह खत्म हो जाएगा और रात को (उनके पास) बैठना भी बंद हो जाएगा। इसे भयंकर गुनाह कहा जाएगा। आपको तो अंत तक 'ये जीएँगे', ऐसा मानकर अंत तक दवाई और सारे उपचार वगैरह करने हैं। भीतर

भय लगने लगे, अंदर भय लगता रहता हो तो कहना, 'व्यवस्थित में जो होगा वह होगा। लेकिन भयभीत होने की जरूरत नहीं है।' व्यवस्थित कब कहा जा सकता है? उनका देहांत हो जाए तब। तब फिर आप कहना, व्यवस्थित है।

कोई भी चीज़ जब भूतकाल हो जाए तब 'व्यवस्थित' ही कहना चाहिए। लेकिन 'जो होना है' उसे व्यवस्थित नहीं कहना चाहिए। होने के बाद में कहो और अगर भय लगने लगे तो निश्चित करना चाहिए कि, 'व्यवस्थित है, लेकिन मुझे तो सतर्क रहना है। मेरे भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। मुझे तो सतर्कता से ही चलना है।' इतना ही समझने की जरूरत है। क्योंकि वैज्ञानिक है यह तरीका। इस तरह गप्प लगाने से नहीं चलेगा, सैद्धांतिक होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हमें 'व्यवस्थित' का अवलंबन कब लेना चाहिए?

दादाश्री : जब कटने के बाद में। क्योंकि 'व्यवस्थित' का सीधा अवलंबन कौन लेता है? जिसे संपूर्ण ज्ञान हो वही लेता है। बाकी लोग तो ज़रा गड़बड़ कर देते हैं, 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग कर देते हैं। अतः काम हो जाने के बाद में 'कम्प्लीट' (संपूर्ण) 'व्यवस्थित' कहना है और भविष्य का विचार आए तब फिर कह देना कि 'व्यवस्थित' है।

प्रश्नकर्ता : कितनी ही बार काम की शुरुआत भी नहीं की होती है और बातचीत में 'व्यवस्थित है, व्यवस्थित है' बोलते हैं।

दादाश्री : नहीं बोलना चाहिए ऐसा, जोखिम है यह। वह तो, ज्ञानी पुरुष तो चाहे सो करें। बाकी सब का तो अभी संपूर्ण शुद्ध उपयोग नहीं है, इसलिए इससे जोखिम रहेगा। 'व्यवस्थित' कहकर, आँखें बंद करके क्यों नहीं चलते?

रास्ते में आँखें बंद करके चलते हैं क्या? क्यों 'व्यवस्थित' कहकर नहीं चलता? वहाँ तो खुली आँखों से चलता है और 'व्यवस्थित' बोलकर ऐसा क्यों नहीं कहता कि, 'अब बैठे रहो न! अब खाना मिले तो ठीक है, वर्ना कोई बात नहीं, 'व्यवस्थित' है! ऐसा नहीं बोलता न? 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग करना, वह गुनाह है।

हमने जो 'व्यवस्थित शक्ति' कहा है न, तो इस शरीर के सभी अवयव उसके ताबे में हैं। इसलिए आप सहज भाव से 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा मानकर व्यवस्थित को सौंप देना और दखलंदाजी मत करना। 'काम पर नहीं जाएँगे तो क्या बिगड़ जाएगा!' ऐसा कुछ नहीं बोलना चाहिए। इसे दखलंदाजी कहते हैं। जाना आपकी सत्ता में नहीं है, तो ऐसा कैसे बोल सकते हो? वह दखलंदाजी करता है न, इसलिए बात समझ में नहीं आती। वर्ना बहुत ही आसानी से काम हो जाए। संसार बहुत अच्छे से चले ऐसा है।

अब, इस व्यवस्थित को यदि यथार्थ रूप से समझ जाए न, तो ऑफिस में आठ घंटे का काम एक घंटे में हो जाए ऐसा है। एक ही घंटे में हो जाए, दर्शन इतना उच्च हो जाता है।

भविष्य की प्लानिंग की लक्ष्मणरेखा

प्रश्नकर्ता : हम हफ्ते भर का कार्यक्रम प्लान बनाते हैं कि अगले हफ्ते में क्या-क्या करना है, तो उसे फ्यूचर (भविष्य) की चिंता माना जाएगा?

दादाश्री : नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो क्या कहा जाएगा? उसे क्या कहा जाएगा?

दादाश्री : उसे तो 'व्यवस्थित' कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे प्लान बनाना, वह सही है न?

दादाश्री : वह प्लान तो चंदूभाई बनाते हैं, आप नहीं। आप जानो। आप जानने वाले हो! प्लानिंग तो करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : प्लानिंग को उपाधि माना जाता है या नहीं?

दादाश्री : नहीं। उपाधि तो कब, खुद के सिर पर हो तब। यह तो चंदूभाई के सिर पर है। चंदूभाई से कहना चाहिए कि भाई, सही तरीके से करो। प्लानिंग करके करो तो अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपने कहा है न, कि भविष्य की बात एक तरफ रख दो, तेरे हाथ में नहीं है, व्यवस्थित के हाथ में है, तो फिर प्लानिंग करने का कोई प्रयोजन है क्या? तो फिर प्लानिंग करनी चाहिए क्या?

दादाश्री : क्या होता है, वह देखो।

प्रश्नकर्ता : वह जो होता है, वह भी व्यवस्थित है। प्लानिंग होती है, वह व्यवस्थित है।

दादाश्री : प्लानिंग हो जाए तो वह भी गलत नहीं है। नहीं हो तो भी गलत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित' करता है इसलिए चिंता नहीं है, झंझट नहीं है कोई।

दादाश्री : हाँ, भविष्य काल की चिंता ही बंद हो गई। और भविष्य की चिंता बंद हो जाए, ऐसा कभी हुआ नहीं। वह अंतिम अवतार में ही बंद होती है, अंत में उसे केवलज्ञान होने के बाद। और एक यह अक्रम विज्ञान का प्रताप देखो न! सभी कहते हैं, 'मुझे कोई चिंता-विंता कुछ भी नहीं है'।

प्रश्नकर्ता : लेकिन 'यह चिंता नहीं है', यह तो व्यवस्थित का प्रताप है न!

दादाश्री : हाँ। व्यवस्थित के ज्ञान का प्रताप

है! और सिर्फ व्यवस्थित की वजह से नहीं, संलग्न (शुद्धात्मा से) है यह। आप शुद्धात्मा हो गए हो न, तो शुद्धात्मा को चिंता हो ही नहीं सकती न! यह व्यवस्थित आपको इसमें हेल्प करता है वना उसमें ज़रा उलझन रहा करती। संपूर्ण शुद्धात्मा को चिंता कैसी? चिंता तो कहाँ पर होती है? अस्सी प्रतिशत शुद्ध हो गए और बीस प्रतिशत बाकी है तो बीस प्रतिशत चिंता रही। यहाँ पर आप सौ प्रतिशत शुद्ध हो जाते हो, चिंता किसे रही फिर? व्यवस्थित इसमें हेल्प करता है। सब से बड़ी खोज है यह व्यवस्थित तो!

भूतकाल, 'अभी' कौन याद करता है?

प्रश्नकर्ता : कल की चिंता नहीं करें तो कैसे चलेगा?

दादाश्री : कल होता ही नहीं है। कल तो किसी ने देखा ही नहीं दुनिया में। जब देखो तब 'टु डे' (वर्तमान) ही होता है। कल तो मुश्किलों के साधन की तरह है। बीते हुए कल का अर्थ जो काल जा चुका है, वह है। भूतकाल अर्थात् बीता हुआ कल। यानी आने वाले कल की चिंता करने की ज़रूरत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो पहले से ही टिकिट किसलिए खरीदते हैं?

दादाश्री : वह तो 'एविडेन्स' (प्रमाण) है। वह सच न भी हो कभी। यह आप प्रोग्राम नहीं बनाते कि पच्चीसवीं तारीख को मुंबई जाना है, अट्ठाइसवीं तारीख को बड़ौदा जाना है? उन सबका आपको विज्ञान है ही। उस विज्ञान के कारण ही आप यथार्थ रूप से नहीं देखते हो। आप इस तरह के हकबकाए हुए 'विज्ञान' से ही देखते हो। यथार्थ 'विज्ञान' में आप स्थिरता में रहकर देख सकते हो। नियम ऐसा है कि एक बाउन्ड्री तक आप देखो तो आपको 'यथार्थ' विज्ञान मिलेगा और

उस 'बाउन्डी' से आगे आज देखोगे तो अभी ठोकर खा जाओगे। जिसकी जरूरत नहीं है उसे देखना मत। हम घड़ी के सामने देखते ही रहें तो बल्कि यहाँ पर ठोकर लगेगी। इसलिए इस विज्ञान में कुछ हद तक का ही देख-देखकर चलना चाहिए।

जहाँ आने वाले कल नाम की कोई चीज़ ही नहीं उसका अर्थ ही क्या? जो काल चल रहा है, वह आज है और बीते हुए काल को कल कहते हैं, वह भूतकाल है। भूतकाल को तो कोई मूर्ख भी याद नहीं करता। सिर्फ वर्तमान काल में ही रहो।

भूतकाल याद करके, खो देते हैं वर्तमान

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में कैसे रह सकते हैं ?

दादाश्री : भूतकाल भूल जाओगे तो! भूतकाल तो गॉन (चला गया), आज उसे याद करने से क्या होगा? वर्तमान का फायदा, इस फायदे को खो दोगे और वह नुकसान तो है ही। कहाँ रहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में।

दादाश्री : हं, भविष्य काल तो व्यवस्थित के ताबे में सौंप दिया, भूतकाल तो खो गया। तो कहते हैं, 'भूतकाल की जो-जो फाइलें मन में खड़ी होती हैं उनका अभी निकाल नहीं करना है? तब कहें, 'नहीं, वह तो रात को दस-ग्यारह बजे आओ। एक घंटे का टाइम रखा है उस समय आओ, उनका निकाल कर देंगे। अभी नहीं।' अभी तो यदि पैसों का नुकसान हो जाए तब भी वर्तमान नहीं खोएँगे। यानी कहाँ रहना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में।

दादाश्री : ये दादा किसमें रहते हैं ?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में।

दादाश्री : हं, घड़ी भर पहले हमें ऐसा कह गए थे, यदि मैं उसे याद करूँ तो अभी जो वर्तमान है, इसे भी खो दूँगा। जो हो गया उसका वहीं पर निकाल कर देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : एकजेक्टली वर्तमान में बरतना, इसे उदाहरण सहित समझाइए।

दादाश्री : अभी आप किसमें हो? कुसंग में हो या सत्संग में हो? होटल में हो या शेर बाज़ार में हो, वह पता नहीं चलता आपको? कौन से बाज़ार में हो?

प्रश्नकर्ता : सत्संग में हूँ।

दादाश्री : सत्संग में हो। यानी अभी आप वर्तमान में बरत रहे हो। अब, चार दिन पहले आपके छः सौ रुपये खो गए हों, वह याद आए तो वह भूतकाल हो गया था। उन्हें अगर यहाँ पर वर्तमान में याद करते हो, तो भूतकाल को खींच लाए। और (पहले) यहाँ आते हुए कोई तकलीफ हुई हो न, (तो अभी) उसके बारे में सोचो कि, अरे तकलीफ होगी। अब तो ऐसा करना है और वैसा करना है, यहाँ पर बैठे-बैठे वर्तमान में, भविष्य काल का विचार करे तो उसे भविष्य काल कहा जाएगा। इसलिए वर्तमान में बरतने को कहते हैं। क्या गलत कहते हैं? समझ में आ गया पूरा?

प्रश्नकर्ता : अब समझ में आ गया।

दादाश्री : पिछले साल बेटे की मृत्यु हो गई हो वह सत्संग में याद आए न, तो वह मन का स्वभाव है, वह दिखाता है, तो खुद भूतकाल में खो जाता है। वर्ना यों ही खो जाए, ऐसा व्यक्ति नहीं है। यह बात कोई छेड़ने वाला चाहिए। कोई दखल देने वाला हो तो तुरंत ही मन अंदर शोर मचाएगा, मन दिखाएगा, 'बेटा मर गया है न! मेरा बेटा...' 'अब, वह तो चला गया, उससे हमें

यहाँ क्या लेना-देना? यहाँ क्यों लेकर आया, यह फाइल तो, ऑफिस की फाइल यहाँ क्यों लेकर आया है?' हाँककर, निकाल देना चाहिए।

इस तरह विभाजन करना नहीं आएगा तो क्या होगा? रसोई में भी लगेगा कि बेटा मर गया। इसलिए फिर अच्छे... रस-पूरी हों न, फिर भी क्या उसका सुख चला नहीं जाएगा?

प्रश्नकर्ता : चला जाएगा।

दादाश्री : उस समय बेटे का विचार आए तो, गेट आउट, ऑफिस में आना, नहीं बोल सकोगे ऐसा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, कह सकते हैं।

दादाश्री : 'क्यों आया है', ऐसा नहीं कह सकते? 'वे तो आपके बुलाने पर आए हैं।' लेकिन आपको कहना है, 'यहाँ नहीं, कम इन द ऑफिस।' और रस-रोटी खाते समय याद आए, वहाँ यात्रा में जाना है, वहाँ मेरा खाने का इंतज़ाम हो जाएगा या नहीं! अरे भाई, यह यहाँ पर क्यों आया है? ऐसा विचार अंदर आता है या नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : आता है अंदर।

दादाश्री : तो आपको क्या कहना चाहिए? यहाँ से गेट आउट। वहाँ पर जो कुछ भी होगा, वहाँ का हम देख लेंगे। ऑन द मोमेन्ट कह देना चाहिए। इसलिए लोग तो ऑफिसों में भी ऐसा हिसाब रखते हैं, डॉक्टर से मिलने का टाइम, टाइम टु गो। तो लोग उस तरह एडजस्ट हो जाते हैं न? और टाइम नहीं रखा हो तो?

प्रश्नकर्ता : कभी भी आ जाएँगे।

दादाश्री : मेरे जैसे तो, यदि डॉक्टर ने टाइम नहीं रखा हो तो घुस ही जाएँगे न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, घुस जाएँगे।

दादाश्री : यानी यह टाइम रखना चाहिए। इसी तरह हमें अंदर वाले के लिए टाइमिंग रखना चाहिए। वे तो कभी भी आ जाते हैं और शोर मचाते हैं। वे फिर खाने भी नहीं देते। तो उन्हें घुसने ही क्यों दिया, उनके बाप का राज है क्या? हम जीवित हैं, वे सब तो मरे हुए हैं। हमारा यह सारा विभाजन सही है न?

प्रश्नकर्ता : एकदम सही है।

दादाश्री : जिस रास्ते से मैं आया हूँ, वही रास्ता सिखा रहा हूँ।

ऑफिस में साहब ने चार बजे कोई काम सौंपा हो कि, ज़रा इसका एक्स्ट्रैक्ट (निष्कर्ष) निकालकर दे दो न! तब बीच में अंदर अगर मन बोले कि, रात को होटल में कैसा मज़ा आया था! ऐसे बोले और अंदर वे चित्र भी दिखाई दें। ऐसे एविडेन्स खड़े हो जाएँ तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : काम बिगड़ जाएगा।

दादाश्री : हाँ, तब फिर उस बात का एक्स्ट्रैक्ट नहीं निकल जाएगा। फिर वही साहब डाँटेंगे। देखो, उलझ गया न, भविष्य की चिंता में, भूतकाल में खो गया न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, खो गया।

दादाश्री : तो ऐसा है। हमने जो ज्ञान दिया है न, वर्तमान में रहो, भूतकाल में नहीं। कोई भूतकाल हेल्प (मदद) नहीं कर सकता, नुकसान ही करता है। हम वर्तमान में रहते हैं।

ये स्त्रियाँ खाना कैसे बना पाती हैं? स्त्रियाँ डेढ़ घंटे में पूरा भोजन बना देती हैं। और आप बनाकर देखो!

प्रश्नकर्ता : नहीं बना सकते।

दादाश्री : क्योंकि वे वर्तमान में रह सकती

हैं। और ये पुरुष तो चंचल स्वभाव के, मन तरह-तरह से शोर मचाता है और पत्नी को कोई ऐसी शारीरिक तकलीफ आए तब आप कहो कि, 'तू सो जा, तेरी तबीयत ठीक नहीं है।' और आप दाल बनाओ तो दाल बिगड़ जाएगी। बिगड़ी हुई दाल को सुधारने जाओगे तो और भी ज्यादा बिगड़ेगी।

यहाँ से स्टेशन गए और गाड़ी से जाना था, बहुत जल्दी थी, आज की तारीख का केस था, फिर भी अगर गाड़ी हाथ नहीं आई और गाड़ी चूक गए तो चूक गए। वह हो गया भूतकाल और 'कोर्ट में क्या होगा?' वह भविष्य काल है, वह 'व्यवस्थित' के ताबे में है। इसीलिए हमें वर्तमान में रहना है! हमारा तो, तुरंत ही ऐसा पृथक्करण हो जाता है। आपको ज़रा देर लगती है। हमें 'ऑन द मोमेन्ट' वहाँ पर सारा ज्ञान हाज़िर हो जाता है। यानी आपको वर्तमान में रहना है। सत्संग चल रहा हो, तो सत्संग में रहना चाहिए।

भूतकाल को याद करना, वह भयंकर गुनाह है

प्रश्नकर्ता : कल सत्संग में ऐसी बात निकली थी कि भूतकाल याद मत करो और वर्तमान में रहो। अब मुझे हुआ कि भूतकाल याद नहीं करना है लेकिन भूतकाल का ही मन और चित्त के सामने एकदम तादृश्य खड़ा हो जाता है। इसलिए भूतकाल तो ऐसे डंक मारता है, रोम-रोम में भूतकाल खड़ा हो जाता है। तो ऐसा लगता है कि भूतकाल भूलें कैसे?

दादाश्री : ऐसा है न कि आपकी यह (भूतकाल याद करने की) क्रिया बैर के *निकाल* के लिए चलती है। आपको तो भूतकाल दिखेगा तो प्रतिक्रमण चालू हो जाएगा। अतः भूतकाल याद किए बिना तो आपको वह हिसाब नहीं दिखेंगे न! बाकी ऐसा, आपके जैसा किसी को ही होता है न। ऐसा सभी को नहीं होता। इसलिए औरों को 'वर्तमान में रहो' ऐसा कहते हैं।

भूतकाल को तो बुद्धिशाली व्यक्ति हों, जो 'ज्ञान' नहीं समझते हों, वे भी भूतकाल को याद नहीं करते। क्यों भूतकाल को याद नहीं करना है, कि जिसका उपाय नहीं है, उसका संकल्प नहीं है। भूतकाल यानी बिना उपाय की बात! इसलिए हम क्या कहते हैं कि ज्ञान मिला है तो भूतकाल को कुरेदना (याद करना) नहीं।

व्यवस्थित क्या कहता है? भूतकाल गॉन (चला गया)। भूतकाल को तो कोई मूर्ख भी याद नहीं करता। कोई एक मिनट पहले दस हज़ार पाउन्ड वाली जेब काट गया, तो वह हो गया भूतकाल। उस भूतकाल को याद करना, वह भयंकर गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न, भूतकाल को याद करना, वह भयंकर गुनाह है लेकिन याद आ ही जाता है।

दादाश्री : याद आ जाता है, उसे भी आपको जानना चाहिए। उसके ज्ञाता-द्रष्टा रहना है। जो आत्मा दिया है, वह आत्मा ऐसा-वैसा नहीं है, निरंतर एक क्षण के लिए भी समाधि न जाए, ऐसा आत्मा दिया है। ऐसे कितने ही महात्मा हैं जिनकी एक क्षण के लिए भी समाधि नहीं जाती।

आपको तो यह 'ज्ञान' मिला है और भविष्य काल 'व्यवस्थित' के ताबे में सौंप दिया है। अतः वर्तमान में रहो, व्यवस्थित पर तो आपको विश्वास हो गया है न? तो फिर भविष्य काल के लिए आपको कुछ भी करना बाकी नहीं रहा। यह भूतकाल जो आप कुरेदते हो, वह आपकी पिछली फाइलों का *निकाल* करते हो। इसलिए उसे भूतकाल कुरेदना नहीं कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अब यह ठीक है।

दादाश्री : ये दूसरे लोगों के अलग बातों में व्यर्थ में ही भूतकाल कुरेदते हैं। फाइलों का

निकाल करने के लिए तो भूतकाल कुरेदना पड़ता है। क्योंकि हमें दुकान खाली करनी है। तो अब हमें क्या करना चाहिए? भरा हुआ माल बेच देना चाहिए और नया माल नहीं खरीदना चाहिए। फिर भी इतना विवेक रखना है कि कोई माल नहीं बिक रहा हो तो, शक्कर खत्म हो गई हो तो वापस दूसरी नई लानी पड़ेगी। यानी कि यह दुकान विवेकपूर्वक खाली करनी है।

प्रश्नकर्ता : यदि भूतकाल को याद नहीं करना है कहेंगे, तो फिर प्रतिक्रमण करने की क्या ज़रूरत है ?

दादाश्री : जो प्रतिक्रमण करता है उसे भूतकाल से कोई परेशानी नहीं है। प्रतिक्रमण यानी हम अतिक्रमण को खत्म करके उसका निकाल करते हैं। भूतकाल नहीं कुरेदना यानी क्या कि परसों किसी के साथ बखेड़ा हो गया था तो उसे मन में अंदर रखे रहें। लेकिन यदि प्रतिक्रमण करने के लिए याद आए तो उसमें हर्ज नहीं है, किन्तु मन में नहीं रखना है। उसे हम बोझरूप समझे, ऐसा हमें नहीं करना चाहिए।

प्रतिक्रमण करने के लिए तो भूतकाल को याद करना पड़ता है। प्रतिक्रमण तो जितना कुछ हम भूल गए हों, अतिक्रमण हो गया हो तो उसे वापस याद करके, फिर से आज प्रतिक्रमण करना पड़ता है। वह तो चलेगा ही नहीं न! प्रतिक्रमण तो करने ही पड़ेंगे न! यह प्रतिक्रमण का मुख्य मार्ग है अपना! और प्रतिक्रमण तो भूतकाल में जो हो चुके हैं उसके ही होते हैं न! भविष्य काल के लिए तो प्रत्याख्यान होते हैं।

प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो

प्रश्नकर्ता : भूत और भविष्य को भूल जाना है ?

दादाश्री : नहीं, भूल नहीं जाना है, वर्तमान

में ही रहना है। भूलना, वह तो बोझा कहलाएगा। भूलने से भुलाया नहीं जा सकता और जिसे भूलने जाएँ वह और अधिक याद आता है। एक व्यक्ति मुझे कह रहा था कि, 'मैं सामायिक करने बैठता हूँ तब विचार करता हूँ कि 'दुकान आज याद नहीं आए।' उस दिन सामायिक में सबसे पहला धमाका दुकान का ही होता है! ऐसा किसलिए होता है? क्योंकि दुकान का तिरस्कार किया न कि दुकान याद नहीं आए! हमें तो किसी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वर्तमान में रहना, वही एक बात है।

अहमदाबाद के एक सेठ मिले थे। वे खाना खाते समय मिल में चले जाते थे। मेरे साथ खाने बैठे थे। तब सेठानी सामने आकर बैठीं। मैंने पूछा, 'सेठानी जी, आप क्यों सामने आकर बैठ गईं?' तो कहती हैं, 'सेठ जी कभी भी ठीक से भोजन नहीं करते हैं।' इससे मैं समझ गया। जब मैंने सेठ जी से पूछा तो कहते हैं, 'मेरा पूरा चित्त वहाँ चला जाता है।' मैंने कहा, 'ऐसा मत करना। वर्तमान में थाली आई, उसे पहले (निपटाओ)। अर्थात् प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो। जो प्राप्त वर्तमान है, उसे भोगो'।

चिंता होती है तो फिर खाना खाने के लिए रसोई में जाना पड़ता है? फिर बेड रूम में सोने जाना पड़ता है? और ऑफिस में काम पर?

प्रश्नकर्ता : वो भी जाते हैं।

दादाश्री : वे सारे डिपार्टमेन्ट्स हैं। तो अगर एक ही डिपार्टमेन्ट की परेशानी हो तो उसे दूसरे डिपार्टमेन्ट में मत ले जाना। एक डिविज़न में जाओ तब वहाँ का पूरा काम कर लेना। लेकिन दूसरे डिविज़न में भोजन करने गए, तो पहले डिविज़न की परेशानी वहीं पर छोड़कर जाना है और भोजन करने बैठो तो टेस्ट से खाना है। बेड रूम में जाओ तब भी पहले वाली परेशानी वहीं

पर छोड़कर जाना है। जिसकी ऐसी सेंटिंग नहीं है, वह व्यक्ति मारा जाएगा। जब खाना खाने बैठा है तब चिंता करता है कि 'ऑफिस में साहब डाँटेंगे तब क्या करूँगा?' अरे, जब डाँटेंगे तब देख लेंगे! अभी खा न आराम से!

यह भोजन की थाली सामने आए तो एक चित्त से उसे शांति से खा। यदि चित्त ठिकाने पर होगा तो स्वादिष्ट लगेगा और चित्त हाज़िर नहीं रहेगा तो बत्तीस प्रकार के पकवान भी नहीं भाएँगे। इस शरीर को इतनी सी खिचड़ी दी हो तो पूरी रात शांति रखे, समाधि रखे वैसा है। यह तो, शरीर यहाँ पर भोजन करता है और 'खुद' जाता है मिल में!

इन मनुष्यों का फिर हार्टफेल हो जाता है! स्कूल में तो फेल नहीं होता था और यहाँ किस तरह फेल हो जाता है? ये जानवर जब खाते हैं, तब पता लगाना कि उनका चित्त बाहर कहीं जाता है या नहीं? कुत्ता भी खाते समय स्वाद लेकर पूँछ पटपटाता है! सभी जानवरों का चित्त, जब वे खाते हैं, तब खाने में ही होता है, और इन सेठों, वकीलों, डॉक्टरों का चित्त तो खाते समय एब्सेन्ट (गैरहाज़िर) रहता है, इससे तो हार्टफेल और ब्लडप्रेसर हो जाता है। हार्टफेल और ब्लडप्रेसर तो एब्सेन्ट चित्त का परिणाम है। बगैर चित्त के खाता है, उससे अंदर की सभी नसें कड़क हो जाती हैं। इन डॉक्टरों का चित्त ऑपरेशन करते समय अन्य कहीं भटके तो मरीज़ की क्या दशा होगी? खाते समय भी भीतर कितने ही ऑपरेशन होते हैं, इसलिए भोजन करते समय, चित्त को प्रेज़ेन्ट (हाज़िर) रखकर खाओ। भोजन करते समय 'चित्त' की हाज़िरी लेनी चाहिए कि 'हाज़िर है क्या?'

ऐसा समय भी आएगा कि डॉक्टरों का चित्त कहीं का कहीं भटकेगा! लेकिन ऑपरेशन के समय चित्त हाज़िर रहता है, उतना अच्छा है।

यदि चित्त की हाज़िरी के बिना ऑपरेशन करेंगे तो उस मरीज़ के मरने के बाद, जल जाने के बाद अंदर से कैंची निकलेगी! इसीलिए तो डर के मारे डॉक्टर ऑपरेशन के समय चित्त को हाज़िर रखते हैं।

शायद सभी जगह चित्त हाज़िर न भी रहे। अन्य कहीं पर चित्त गैरहाज़िर रहेगा तो चलेगा, लेकिन मात्र भोजन करते समय चित्त को हाज़िर रखना।

प्रश्नकर्ता : 'वर्क व्हाइल यू वर्क एन्ड प्ले व्हाइल यू प्ले' उसके जैसा, दादा?

दादाश्री : ऐसे वाक्य फॉरेन वाले सहज लोगों के लिए हैं, विकल्पी के लिए नहीं हैं। ज्ञानी को तो 'वर्क व्हाइल यू वर्क एन्ड प्ले व्हाइल यू प्ले' रहता है। क्योंकि उनका बाहर का भाग और अंदर का भाग, दोनों ही सहज होते हैं। उनका चित्त तो कभी भी गैरहाज़िर नहीं रहता।

इन्डियन्स (भारतीयों) के लिए तो यह वाक्य बेकार है, इसे रखकर क्या करना है? फिर भी हम कहते हैं कि मात्र भोजन करते समय चित्त को हाज़िर रखना। ऑफिस जाने के लिए ग्यारह के बदले सवा ग्यारह हो जाएँ तो 'दादा' को याद करना, कहना कि, 'दादा, आप कहते थे न कि भोजन करते समय चित्त हाज़िर रखना, लेकिन आज तो सवा ग्यारह बज गए हैं। मैं कुछ जानता नहीं। आप कहते हो जैसे चित्त की हाज़िरी में ही भोजन कर रहा हूँ, फिर आगे आप जानो।' तब फिर चित्त ठिकाने पर रहेगा और बाँस को जो कहना हो वह भले ही कहे और बाँस भी प्रकृति द्वारा नचाया जा रहा एक लट्टू ही है न! स्वसत्ता में आया ही नहीं है न वह! पुरुष (आत्मा) हुआ ही नहीं न! जगत् पूरा ही, परसत्ता में ही है न!

भोजन करते समय चित्त को हाज़िर रखना

चाहिए, ताकि पता चले कि पकौड़ी में नमक ज्यादा है या कम, मिर्च ज्यादा है या कम! ये तो चित्त की गैरहाज़िरी में भोजन करते हैं तो पता ही नहीं चलता कि चाय गुड़ की है या चीनी की! अरे, अभी जो संयोग मिला है उसे अच्छी तरह भोग। यह तो सेठ भोजन यहाँ पर करता है और कारखाना सात मील दूर हो, तो वहाँ पहुँच चुका होता है! जो मिलता है, उसे हम सलाम करते हैं न! सात मील दूर हो उसे तो कोई अक्ल वाला भी सलाम नहीं करता।

यह तो पैसा-पैसा, तो कुत्ते की मौत मरोगे, कषायों में मरोगे! एक सेठ कहता है कि, 'एक बार तो हार्ट अटैक आ चुका है।' अरे, एक बार तो घंटी बज चुकी है, उसके बाद दूसरी और तीसरी घंटी पर तो गाड़ी रवाना हो जाएगी। हार्ट अटैक वह किसका फल है? भयंकर कुचारित्र का फल है, तो सीधा हो जा और ज्ञानी के पास जा। तेरे कृत्यों की अकेले में माफ़ी माँग, तब भी तू छूट जाएगा।

चित्त गैरहाज़िर हो तब भोजन मत करना और चित्त हाज़िर हो तभी भोजन करना जब बाहर ऐसा प्रोपेगैन्डा (प्रचार) होगा न, तभी से रोग कम होने लगेंगे। चित्त को तो हर जगह हाज़िर रखना चाहिए, 'प्रेजेन्ट' रखना चाहिए। खाने में-पीने में, संडास में, सभी जगह पर चित्त हाज़िर रहना चाहिए।

वर्तमान में रहना अर्थात् क्या? अभी यदि आप हिसाब लिख रहे हों तो बिल्कुल 'एक्ज़ेक्ट' उसमें ही रहोगे न? उस समय भविष्य में जाओ तो हिसाब में भूल हो जाएगी। वर्तमान में ही रहे तो एक भी भूल नहीं हो ऐसा है। प्राप्त वर्तमान को भोगो, ऐसा मैं कहता हूँ। भूतकाल तो चला गया। भूतकाल को तो ये बुद्धिशाली भी नहीं उखाड़ते। और भविष्य का विचार करे, वह अग्रशोच है।

इसलिए वर्तमान में रहो। वर्तमान में सत्संग होता है तो वह एकाग्र चित्त से सुनना चाहिए। हिसाब लिख रहे हो तो वह एकाग्र चित्त से लिखो और गालियाँ दे रहे हो तो गालियाँ भी एकाग्र चित्त से दो। वर्तमान में बरते सदा, वे ज्ञानी। लोग भविष्य की चिंता को लेकर और भूतकाल को लेकर वर्तमान नहीं भोग सकते और हिसाब में भूल कर देते हैं। 'ज्ञानी पुरुष' वर्तमान नहीं बिगाड़ते।

भगवान ने क्या कहा था कि, 'प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो।' अर्थात् क्या कि जो प्राप्त है उसे भोग न!

वर्तमान में बरतो ज्ञान से

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में रहना अर्थात् हम अभी सत्संग में बैठे हुए हैं, अब यहाँ सत्संग में सभी सौ-पचास लोग जो बैठे हुए हैं, उन सभी की परिणतियाँ, विचार अलग-अलग हैं न सभी के? अंदर चक्कर घूम रहा होता है सभी का। कोई सामायिक कर रहा होता है, कोई प्रतिक्रमण कर रहा होता है, कोई (भक्ति) पद गा रहा होता है, कोई कुछ सोच रहा होता है, तो इसे क्या समझें हम?

दादाश्री : नहीं, लेकिन जो पद गा रहा होता है न, वह अन्य किसी में नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि ऐसा विचार आ जाए कि मुझे प्रतिक्रमण करना है, तो? अगर उसे ऐसा भाव हुआ, मन में ऐसा हुआ कि मुझे प्रतिक्रमण करना है तो क्या नहीं करना चाहिए?

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं। लेकिन जब पद गा रहा होता है, तब अन्य किसी में नहीं होता। प्रतिक्रमण कर रहा हो, उसे करने दो। ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन वस्तु स्थिति में तो अगर प्रतिक्रमण करे तो भी अच्छा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर उसका भाव और उस तरफ का खिंचाव ज्यादा होगा तो कहेगा, मुझे प्रतिक्रमण ही करने हैं अथवा फिर मुझे सामायिक करनी है, तो क्या नहीं करना चाहिए?

दादाश्री : कर सकते हैं, करनी चाहिए। प्रतिक्रमण और सामायिक तो करने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो उसे वर्तमान में रहे, ऐसा कहा जाएगा या नहीं?

दादाश्री : वह तो अपनी दवाई है ही न! इलाज (दवाई) तो करना ही पड़ेगा न! लेकिन इसके अलावा वर्तमान में रहना है। प्रतिक्रमण तो करना ही चाहिए। आपको कोई अड़चन आ जाए तो करना ही पड़ेगा न! वर्तमान किसे कहते हैं? पद (भजन) गाते हो न, उस समय आप वर्तमान में हो, ऐसा निश्चित हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह कोई बाहर का खिंचाव हो तो अलग बात है, तो उसे यहाँ रहना चाहिए। लेकिन वह खुद यदि अपने आप में ही रहता हो तो क्या होगा?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करना हो तो कर सकता है। प्रतिक्रमण-सामायिक में बैठना, ऐसा सब किया जा सकता है।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करना, सामायिक करना, वह सब वर्तमान में रहना ही माना जाएगा क्या?

दादाश्री : उसे वर्तमान ही माना जाएगा।

प्रश्नकर्ता : भले ही फिर पद गाए जा रहे हों!

दादाश्री : नहीं, पद गाए जाएँ ऐसा नहीं, अंदर आपकी जो परिणति आई न, उसी अनुसार परिणति में रहे, उसी में प्रतिक्रमण करे तो वर्तमान ही माना जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह (पद) खींच ले जाए तो? वह पद में चला जाए तो क्या पद नहीं गा सकते?

दादाश्री : नहीं, पद में खिंच नहीं जाना है। वर्तमान कहने का भावार्थ ऐसा है कि जो पद में रह रहा है, वह तो वर्तमान में है ही। और दूसरा जो प्रतिक्रमण में है, वह भी वर्तमान में है। और कुछ चीजों में भी वर्तमान में है। लेकिन जब अन्य किसी और जगह पर खो जाएँ तब भूल हो जाती है। अतः 'वर्तमान में' वह सबसे बड़ी चीज़ है। वर्तमान! क्योंकि भविष्य काल की तो झंझट ही नहीं है न! भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो व्यवस्थित के ताबे में ही है।

दादाश्री : तो फिर, प्रतिक्रमण (करने हों) तो फिर उसकी तो छूट है ही न! प्रतिक्रमण तो करने ही पड़ेंगे। प्रतिक्रमण तो सबको करने ही पड़ेंगे। उस (असीम जय जयकार) समय प्रतिक्रमण-व्रतिक्रमण सभी छोड़ देना चाहिए। क्योंकि उस समय पापों का नाश होता है, पाप भस्मीभूत होते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार,' गवाएँ तो वह भी वर्तमान ही हुआ न?

दादाश्री : नहीं, वर्तमान का सवाल नहीं है। यह इसमें, आप वर्तमान में इस तरह प्रतिक्रमण लो तो चलेगा लेकिन यह (असीम जय-जयकार) बुलवाते समय प्रतिक्रमण या अन्य कुछ भी नहीं करना है।

प्रश्नकर्ता : क्या उस वक्त ज्ञानी पुरुष की वाणी बाहर निकलती हैं?

दादाश्री : हाँ, उस समय तो क्या होना चाहिए? तन्मयाकार, इसे बोलना शुरू ही कर

देना है। पाप भस्मीभूत हो जाते हैं। परिणति परमानंद में आ जाती है और यह चित्त दादा में अभेद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : इस तरह अभेदता हो जाती है क्या उस समय?

दादाश्री : हाँ, अभेदता हो जाती है। इसलिए उसका तो बहुत ही फल है। जबकि यह तो साधारण बातें हैं। अपने यहाँ कितने ही लोग ऐसे हैं न, जो यह बोलते ही नहीं हैं। उन्हें देखता हूँ, बैठे रहते हैं। उन्हें बोलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बोलेंगे तो एकरूपता हो जाएगी उनकी? एकरूपता होगी, एक तार में बंध जाएँगे?

दादाश्री : वर्ना प्रतिक्रमण करने की तो सभी को छूट है, कभी भी, एट एनी टाइम। लेकिन सिर्फ कौन से टाइम पर नहीं? जब मैं 'दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो' बुलवाता हूँ उस टाइम पर नहीं। उस समय कुछ भी नहीं करना चाहिए।

अक्रम की सामायिक से पकड़ में आए वर्तमान

प्रश्नकर्ता : लेकिन हर क्षण में वर्तमान-भूतकाल तो रहता ही है, दादा।

दादाश्री : नहीं, लेकिन उस (क्षण का) वर्तमान किसे कहेंगे? बोलने से पहले तो भूतकाल हो चुका कहा जाता है। वर्तमान यानी बाहर जो उत्पन्न होता है, उसी में रहती है वह परिणति। अर्थात् (हर एक क्षण पर) बोल (शब्द), बोलने से पहले तो वह भूतकाल हो चुका होता है। (एक क्षण बाद के) भविष्य काल को बोलने से पहले तो वह वर्तमान काल हो चुका होता है। इसलिए वर्तमान काल को पकड़ते हैं सब। पकड़ना आता है न महात्माओं को थोड़ा बहुत! सभी महात्माओं को पकड़ना आता है! वर्तमान में रहते हैं काफी कुछ! कभी-कभी थोड़ा आगे पीछे हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में रहना यानी क्या?

दादाश्री : वर्तमान में रहना यानी, जिस समय चाय पी रहे हों, उस घड़ी चाय यों टेस्ट से पीना, इसे वर्तमान कहते हैं। भोजन करते समय भोजन करना टेस्ट से।

प्रश्नकर्ता : भोजन के लिए बताया, चाय-पानी और क्या?

दादाश्री : सबकुछ टेस्ट से करना।

प्रश्नकर्ता : सब टेस्ट से ही होता है, दादा। बिना टेस्ट के चाय नहीं पीता। चाय यदि टेस्टी हो तभी पीता है। यदि शक्कर कम हो या चीनी कम हो तब भी कईबार लेता नहीं है।

दादाश्री : नहीं! अगर कम हो तो उसे भी जानो फिर, लेकिन टेस्ट से। न भाए तो (चीनी) डालो। उसे टेस्टी बनाकर पीओ। ज़रूरत पड़े तो कहो। यदि कहा जा सके वैसा न हो तो यों ही डाल दो, अपने घर की डाल दो। घर की डालनी हो तो डाली जा सकती है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अर्थात् वर्तमान में रहना, उसे सामायिक कहते हैं। सारे पर्याय दिखें, वही निरंतर सामायिक है। अपना 'अक्रम' का सामायिक करते-करते वर्तमान काल को पकड़ना आ जाता है। ऐसे सीधा-सीधा नहीं आता। आप एक घंटे सामायिक में बैठते हो तब वर्तमान में ही रहते हो न!

ज्ञान प्रकाश दिखाए भूतकाल के दोष वर्तमान में

प्रश्नकर्ता : सामायिक करते समय ज्ञाता-द्रष्टा पद में रहते हैं, यह बात ठीक है, किन्तु उस समय मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार की स्थिति कैसी होती है? सामायिक करते समय खास तौर पर क्या-क्या ध्यान रखना चाहिए?

दादाश्री : ये मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार क्या-क्या कर रहे हैं, वह देखते रहना। जैसे कि यदि आप 'सुपरवाइजर' (निरीक्षक) हों और साहब ने कहा हो कि इनका 'सुपरविज्ञान' (निरीक्षण) करो, तब फिर आप क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : सब के सामने देखते रहना है, वे क्या-क्या कर रहे हैं?

दादाश्री : सुपरविज्ञान ही करना है, किसी को धौल-वौल नहीं लगानी है। उसी तरह मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार को देखते ही रहना है।

सामायिक में भीतर आत्मा को जुदा रखने का प्रयत्न करते रहना और अंदर का बाकी सबकुछ देखते ही रहना है। 'आत्मा', 'देखना और जानना', ये दो ही अभ्यास करता रहता है। आत्मा किसी और अभ्यास में नहीं जाता। 'जो हुआ' उसे देखता रहता है। मन किस धर्म में है, बुद्धि किस धर्म में है, वह सब देखता रहता है। सभी को 'देखना', सिर्फ देखते ही रहना है। जैसे कि सिनेमा में देखते हैं न! कि लोग लड़ाई कर रहे हैं, कोई दंगा कर रहा है लेकिन आप उसमें 'इमोशनल' (भावनाशील) नहीं होते हो न! जैसा सिनेमा में देखते हैं, वैसा। भीतर के पूरे सिनेमा को देखना ही सामायिक है। अड़तालीस मिनट तक करने पर तो बहुत काम हो जाएगा। भूतकाल के सभी दोष वर्तमान में दिखाई दें, वह ज्ञानप्रकाश है, वह मेमोरी (स्मृति) नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर इसमें भूतकाल को याद करने की जरूरत नहीं है?

दादाश्री : भूतकाल को याद नहीं करना है, सामायिक करनी है। सामायिक करना अर्थात् भीतर जो भी चल रहा है, उसे आत्मा देखता रहता है। उस समय आत्मा पूर्ण रूप से ज्ञाता-द्रष्टा रहता है।

जो ज्ञान अक्रिय है, ज्ञाता-द्रष्टा व परमानंदी

है, जो इन तमाम क्रियाओं वाले ज्ञान को जानता है, वह अपनी 'स्वसत्ता' है, वह 'शुद्धात्मा' है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा निर्णय हो जाना, उसी को कहते हैं आत्मानुभव!

शुद्धात्मा होते ही वर्तमान में रह सकते हैं

इस मार्ग पर चलने के लिए निर्भय होना पड़ेगा, निश्चिंत होना पड़ेगा, तभी आत्मा के इस मार्ग पर चल पाएँगे। वर्ना दिया हुआ आत्मा चला जाएगा। एक घंटे के बाद वापस चला जाएगा। इसलिए यह व्यवस्थित दिया है। भूतकाल चला गया और भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में हैं, आपको वर्तमान में रहना है। वर्तमान में, मैं शुद्धात्मा हूँ। वर्तमान में बरतो, यानी वर्तमान में खुद शुद्धात्मा, इन सब में शुद्धात्मा दिखाई दें, तो फिर रहा ही क्या उसमें? वास्तव में कुछ है ही नहीं। शुद्धात्मा और संयोग दो ही हैं। ये संयोग फिर वियोगी स्वभाव के हैं।

इनका स्वभाव ही वियोगी है। इसलिए हम कहें कि भाई, आप जाओ न! तब कहेंगे भाई, साढ़े दस बजे हम चले जाएँगे। फिर आएँगे ही नहीं, बल्कि ऐसा कहेंगे। वे खुद ही वियोगी स्वभाव के हैं। कहना ही नहीं पड़ता, अपने आप ही चले जाते हैं। अब वियोगी स्वभाव के संयोग, तो सास लड़ रही हों उस समय आप चिढ़ते रहते हो, तब आपको समझना नहीं चाहिए कि भाई, सास ने लड़ना शुरु किया है, यह संयोग आया है, वह वियोगी स्वभाव का है। अभी चला जाएगा। तब तक आप शुद्धात्मा देखते रहो। अवस्था बिगाड़नी नहीं चाहिए। कोई भी अवस्था बिगाड़नी नहीं चाहिए। मन-वचन-काया की अवस्था मात्र कुदरती रचना है। उसका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है और फिर वह व्यवस्थित है। अब कुदरती रचना में, सास भी क्या करेगी बेचारी? वे तो निमित्त हैं।

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में तो शुद्धात्मा के स्वरूप में रहना है।

दादाश्री : बस! जगत् में 'शुद्धात्मा' और 'संयोग', दो ही चीजें हैं।

प्रश्नकर्ता : हर क्षण वर्तमान चला जा रहा है, और पुरुषार्थ में संयोगों की ज़रूरत नहीं है।

दादाश्री : हाँ! सही है। संयोग कम्प्लीट (संपूर्ण) वियोगी स्वभाव के हैं। वह तो एक संयोग आता है और ग्यारह बजकर पाँच मिनट हो जाएँ, तब जाने लगता है! उसे कहें कि, 'ले, खड़ा रह, भोजन करके जा।' फिर भी वह खड़ा नहीं रहता। जब उसका काल पके तब जाने ही लगता है। लेकिन यह तो कैसा है कि दो मिनट के बाद वापस वियोग होने वाला हो, तब वह राह देखता है कि 'अभी तक नहीं गया, अभी तक नहीं गया, कब जाएगा?' तो वे दो मिनट उसे दस मिनट जैसे लगते हैं! यह इंतजार करने से तो काल लंबा लगता है!

प्रश्नकर्ता : अब, वर्तमान में रहने के लिए कहा है, तो यह वर्तमान, यह भी काल तो है ही न? यानी काल का बंधन तो हुआ ही न? ज्ञानी को नहीं होता?

दादाश्री : बंधन नहीं। बंधन तो स्वाभाविक है। वास्तव में काल का बंधन नहीं है, व्यवहारिक है। जो आता है, वह संयोगी स्वरूप है। यानी जो संयोग आता है, वह वियोगी स्वभाव का है। बंधन कब कहा जाएगा? वियोग ही न हो, उसे बंधन कहेंगे। यह तो, जो काल आया है, वह फिर भविष्य काल में से भूतकाल हो जाएगा और फिर भविष्य काल में से यहाँ आएगा, यानी वर्तमान में आएगा। उसका काल बदलता रहता है। काल के अधीन हम देखते रहते हैं।

किसी भी संयोग में आपको खुद को

एकाकार होने जैसा नहीं है, उसके तो आप सिर्फ ज्ञाता-द्रष्टा मात्र हैं। संयोगों के साथ आपको झगड़ा करने की भी ज़रूरत नहीं है या फिर उनके साथ बैठे रहने की भी ज़रूरत नहीं है। कोई भी संयोग आए तो कह देना चाहिए कि, 'गो टु दादा।' सभी संयोग तो निरंतर बदलते ही रहने वाले हैं और हम उनसे भिन्न हैं। विचार आया, वह संयोग और उसमें एकाकार होकर हिल जाएँ, वह भ्रांति है, उन्हें तो मात्र देखना और जानना चाहिए।

देखने वाला हमेशा स्थिर रहता है

प्रश्नकर्ता : देखने और जानने में बहुत संघर्ष चलता है। अतः जो-जो संयोग मिलते हैं उनमें बह जाते हैं।

दादाश्री : वह जो बह जाता है, वह कौन बह जाता है? आप तो शुद्धात्मा हो। शुद्धात्मा कैसे बह सकता है? चंदूभाई नाम का पुद्गल बह जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह देखने-जानने में स्थिरता रहनी चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, वह स्थिरता नहीं रहेगी। बल्कि स्थिरता रहने से तो परेशानी हो जाएगी। यदि सिनेमा की फिल्म स्थिर हो जाए तो क्या 'देखोगे' फिर? वह तो चलती ही रहनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : नहीं, वह तो चलती रहेगी लेकिन यही कि हम उसके साथ चलने न लगे और हम स्थिर रहें।

दादाश्री : नहीं। आपको 'देखते' रहना है। 'देखने वाला' तो हमेशा स्थिर ही होता है। 'देखने वाला' कभी बह नहीं जाता। आप 'देखते' नहीं हो इसलिए उससे उल्टा अभ्यास हो जाता है। ज्ञायकभाव में रहे तो कभी भी बह नहीं

जाओगे और भावनाओं के वश में हुआ कि बहा। भावनाओं के वश में आने से तो लोग सिनेमा में भी बह जाते हैं। रोते हैं, हाँ! अरे, लेकिन जहाँ सिर्फ देखना ही था, वहाँ तू रोता क्यों है? जहाँ सिर्फ देखना ही है, वहाँ रोता है! रोता है न? और फिल्म यदि एक ही तरह की हो तो देखना अच्छा लगेगा क्या!

प्रश्नकर्ता : अच्छा नहीं लगेगा, दादा।

दादाश्री : हाँ। फिल्म में कभी शादी होती है, कभी मारपीट होती है, कभी अपहरण होता है, तभी देखना अच्छा लगता है न! यदि पूरी फिल्म में लगातार शादी ही चलती रहे तो अच्छा नहीं लगेगा न? अतः यह पूरी फिल्म देखनी है। जिसमें ज़रा सा भी आनंद कम नहीं हो, वही अपना विज्ञान!

प्रेज़न्ट को छोड़ें नहीं, प्रेज़न्ट में ही रहें

प्रश्नकर्ता : (कमज़ोर संयोगों में) आपने कहा था कि ऐसा बोलना। वह मैं बोलता हूँ कि 'आइ वॉन्ट टू रिमेन इन प्रेज़न्ट' (मैं वर्तमान में रहना चाहता हूँ) लेकिन फिर भी डिप्रेशन आ ही जाता है।

दादाश्री : डिप्रेशन तो चंदूभाई को आता है न, तो आपको क्या दर्ज है? देखना है। 'क्या चंदूभाई! आपको डिप्रेशन आ रहा है!' ऐसा सब कहना। ताकि मुझे नहीं डाँटना पड़े। मैं तो ऐसा-ऐसा कह देता हूँ। 'पूरी दुनिया के बड़े बाप होकर बैठे हो!' ऐसा कहता हूँ। उसी तरह आप भी ऐसा कहना 'क्या चंदूभाई!' कहना आएगा या नहीं आएगा! यानी कि किसी भी प्रकार से प्रेज़न्ट (वर्तमान) में ही रहना है। जब डिप्रेशन आए न, तब आप कहना, 'दादाजी देखो न, चंदूभाई डिप्रेशन हो गए हैं'। आप ऐसा कहना। वह ज़बरदस्त पुरुषार्थ कहा जाएगा। कहना, 'बड़े आए चंदूभाई!

आपको शर्म नहीं आती?' बोलोगे तब फिर दोनों की सगाई कितनी चलेगी?

प्रश्नकर्ता : अलग ही हो जाएगा।

दादाश्री : तैर पाओगे न? समुद्र बहुत बड़ा है! जब डिप्रेशन आए उस समय 'यह मेरा स्वरूप नहीं है, मैं शुद्धात्मा हूँ, इस डिप्रेशन को जानने वाला हूँ', ऐसा तय हो जाए कि वह अलग है तो हो गया कल्याण! जागृति को ही संभालते रहना है, उसी को पोषण देते रहना है, वही शुद्धात्मा है। 'मैं चंदूभाई हूँ', कहने से वह आधार टिका रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान हो जाए तो 'आप' आधार देना छोड़ देते हो, इससे वह गिर जाता है।

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई को ही आग्रह हैं, वह देखता रहता हूँ।

दादाश्री : वह ठीक है। देखने से वे कम हो जाएँगे। बहुत कम हो गए हैं और मैं ये जो धक्के लगाता हूँ, वह तो आपको याद दिलवाने के लिए। धक्के नहीं लगाता मैं आपको?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ लगता नहीं है कि आप धक्के लगाते हैं! यह तो अच्छा लगता है लेकिन इस चंदूभाई का ऐसा सब निकलता है, वह वेदता (वेदन करता) है, उसका है।

दादाश्री : हाँ, वह ठीक है। जब ऐसा निकलता है न, तो उसके लिए तुझे कहना है कि भाई, 'ऐसा नहीं होना चाहिए'। बस, इतना ही। उसी का लेकर बैठे रहोगे और भूतकाल को याद करते रहोगे तब तो फिर आज का खो दोगे।

प्रश्नकर्ता : प्रेज़न्ट को नहीं छोड़ना है।

दादाश्री : यदि हम धक्का मारें तब भी कहना "प्रेज़न्ट को 'देख', धक्के को मत देख।"

वर्तमान में जो बरतता है वह ज्ञाता-द्रष्टा

प्रश्नकर्ता : पहले का जो भ्रम हो गया है उसे निकालने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उससे लेना-देना नहीं है। चंदूभाई को क्या हो रहा है, उसे आपको 'देखना' है। आप अलग और चंदूभाई अलग। फिर अगर चंदूभाई चिढ़ें तो वह भी 'देखते' रहना है और चंदूभाई फूलमाला पहना रहे हों, वह भी 'देखते' रहना है। आप ज्ञाता-द्रष्टा और चंदूभाई कर्ता, इस तरह से रहोगे तो फिट हो जाएगा और हमेशा के लिए रहेगा। आप अलग हो गए, उसके बाद अब आप ज्ञाता-द्रष्टा धर्म में ही आ गए। चंदूभाई को अलग किया है तो अब अलग ही भाव रखना पड़ेगा।

वर्तमान में क्या करना है? तब कहते हैं, चंदूभाई जो भी कर रहे हों, उसे आपको जानना और देखना है, बस। जो कुछ करता है, वह चंदूभाई करता है, उसमें आपको अब कोई हर्ज नहीं है। क्रिमिनल (अपराधी) है या सिविल है (सभ्य), आपको बुरा या अच्छा, वह सब देखने की जरूरत नहीं है। लोग इसके विभाजन करते हैं न! बाहर तो जब तक ज्ञान नहीं है, तभी तक विभाजन करते हैं न? यह सिविल आया और यह क्रिमिनल। अब, डिफॉल्टर (दिवालीया) भी हो सकता है। आपको तो सिर्फ डिफॉल्टर को 'जानना' है। आप ज्ञाता-द्रष्टा स्वभाव में आ गए, शुद्ध स्वभाव में ही आ गए। अब दूसरा कुछ भी नहीं है आपको। डिफॉल्टर है या क्या है, वह देखना और जानना है। जब तक व्यवहार है तब तक हिसाब भी लगाना पड़ेगा कि ये यहाँ थोड़ी कमी है। यहाँ पर ठीक हुआ है। अभी यहाँ थोड़ा करना बाकी है। यहाँ प्रतिक्रमण करना बाकी है। जब तक व्यवहार है, तब तक वह हिसाब लगाना पड़ता है न! यही देखना है न!

इस दुनिया में वर्तमान में रहने जैसी क्या चीज़

है? तब कहते हैं, ज्ञाता-द्रष्टा-परमानंद। ज्ञाता-द्रष्टा रहो, देखो और जानो। गाड़ी जैसे-जैसे आगे बढ़ती जाए वैसे-वैसे देखना है, जानना है। वह आगे बढ़ती जाएगी, लेकिन उसे वर्तमान ही कहा जाएगा। हम निरंतर वर्तमान में ही रहते हैं। भूतकाल को याद नहीं करते या भविष्य काल को बुलाते भी नहीं। और आपको भी वही रास्ता दिखाया है।

पूरे जगत् के तमाम धर्म भविष्य काल की चिंता दूर नहीं करते। सिर्फ अपना ही यह विज्ञान है कि जो भविष्य काल की चिंता दूर करता है। बाकी सभी जगह भविष्य की चिंता तो होती ही है। मेरा क्या होगा? इसकी उसे चिंता होती ही रहती है और आपके पास तो यह ज्ञान है कि व्यवस्थित ही है, इसलिए वह (चिंता) बंद। यानी यह ज्ञान नक्शे, प्लानिंग (आयोजन) सहित हैं। इस अक्रम विज्ञान की सबसे बड़ी प्रसादी है यह, भविष्य की चिंता नहीं।

वर्तमान में ज्ञाता-द्रष्टा के अलावा अन्य कोई नहीं रह सकता या तो भूतकाल में खोया होगा या फिर भविष्य काल में भटकता होगा। आपके पास सरकार की चाहे कितनी भी बड़ी चिट्ठी आ जाए पर भविष्य काल व्यवस्थित है, ऐसा मानकर आपको काम करते रहना है और किसी जीव के हाथ में इतनी भी सत्ता नहीं है। लोगों के हाथ में सत्ता ही कहाँ है? व्यवस्थित के हाथ में ही सत्ता है परंतु लोगों को भान नहीं है। यह आपकी सत्ता नहीं है। यह तो परसत्ता आपसे यह सब करवाती है और आप कहते हो कि मैं करता हूँ, इतना ही यह बंधन है। अगर यह छूट जाए और व्यवस्थित कर्ता है, ऐसा समझ में आ जाए, परसत्ता, तो अलग ही है। भविष्य की चिंता बिल्कुल भी नहीं होती तो अलग ही हो। वर्तमान में जो बरते, वे हैं ज्ञाता-द्रष्टा। वर्तमान में बरते उसका मोक्ष यहीं पर है!

वर्तमान में बरते, वे हैं ज्ञानी

प्रश्नकर्ता : हम ऐसा मानें कि यह देह छूटने पर मोक्ष में जाएँगे, तो यह भविष्य की दृष्टि हुई। पर भूतकाल में दादा खुद कहाँ थे, वह आप देख सकते हैं ?

दादाश्री : नहीं, वह कुछ पता नहीं है। मुझे तो आने वाले कल क्या होगा वह भी पता नहीं और भूतकाल में क्या था, वह भी पता नहीं। मैं तो वर्तमान काल में रहता हूँ और वर्तमान काल में जीता हूँ। और वर्तमान से बाहर आता ही नहीं। कभी भी नहीं आया और उस तरफ उपयोग भी नहीं देता। उपयोग सिर्फ वर्तमान काल में, निरंतर वर्तमान काल में। भूतकाल चला गया, भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में सौंप दिया और वर्तमान में रहो, ऐसा इन सभी से कहता हूँ। क्या कहता हूँ? जो भविष्य काल की अग्रशोच और उपाधियाँ थी, उनको अब व्यवस्थित को सौंप दिया है।

भूतकाल के जन्मों-वन्मों के बारे में मुझे कुछ पता नहीं है। उन अवधानों-ववधानों का कुछ भी पता नहीं। मैं तो उसमें पड़ता ही नहीं न! किसलिए? मुझे तो सिर्फ इतना ही, बस! हम आत्मा संबंधी बात करते हैं, अन्य सभी झंझटों में नहीं पड़ते। वह तो बाय प्रोडक्ट है। रास्ते में आगे बढ़ते हुए किसी का यह प्रोडक्शन निकलता है, किसी का यह निकलता है, किसी का वह निकलता है। ये भी पौद्गलिक प्रोडक्शन है। इनका आत्मा से कोई लेना-देना नहीं है।

अब, इन सभी से मैं क्या कहता हूँ? 'वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही।' जो चीज़ चली गई उसकी चिंता नहीं रही, आगे की (भविष्य की) इच्छा नहीं रही।

भूतकाल चला गया, भूतकाल गॉन। उसे याद करने की अब ज़रूरत नहीं है। भूतकाल को याद

करने की ज़रूरत नहीं है, गॉन। उसे बुद्धिमान भी याद नहीं करते। मूर्ख याद करते हैं, परंतु बुद्धिमान भी याद नहीं करते। और भविष्य काल व्यवस्थित के ताबे में है। इसलिए वर्तमान में रहो। 'वर्तमान में बरते सदा सो ज्ञानी जगमांही।' भूतकाल और भविष्य काल में न बरते और वर्तमान में बरते वे ज्ञानी हैं।

'हम' निरंतर वर्तमान में ही रहते हैं। 'हम' हमारे स्वरूप में रहते हैं और यह 'पटेल' वर्तमान में रहते हैं निरंतर!

वर्तमान में रहना सिखाए ज्ञानी

अब आपका कौन सा काल रहा ?

प्रश्नकर्ता : वर्तमान।

दादाश्री : अभी जलेबी खानी हों, लड्डू खाने हों तो खाओ आराम से। रौब से चाय पीओ। हर एक चीज़ का अंतिम प्रकार का टेस्ट आपको आना चाहिए। भोगना और शुद्ध उपयोग में रहना दोनों एक साथ हो सकते हैं। फिर वर्तमान में जो भी आया हो उसे भोगो।

साथ ही क्या कहता हूँ कि आपको है न, अच्छे आम हों हाफूस और रस निकाला हो तो रस-रोटी मिलाकर कर मत खाना। आम टेस्ट (मजे) से खाना। फाइल का समभाव से निकाल करना। स्वाद लेकर खाना, मिलाकर नहीं खाना चाहिए इनको। क्योंकि मन को तृप्ति होनी चाहिए। अब, आगे की जो फाइलें होंगी न आपकी, उनका निकाल यह तृप्ति पाने के लिए ही है।

अतः आपको कुछ भी मिलाना नहीं है, खाना चैन से, आराम से ऐसे! मैं भी खाता हूँ, ऐसे आराम से, बोलो मैंने आसान बताया है या मुश्किल बताया है? कुछ छोड़ने को नहीं कहा है, है कोई झंझट?

प्रश्नकर्ता : मूल (जड़ से) ही छुड़वा दिया, फिर अब और क्या रहा ?

दादाश्री : सब चला गया, दुःख भी नहीं है और कुछ भी नहीं है। अरे, निरंतर समाधि में! लड़के समाधि में रहते हैं!

हम आम खा रहे हों या फिर भोजन ले रहे हों, उस समय यह सत्संग हमें याद नहीं रहता। आप बाहर आए हुए हों न, हमें यह ज्ञान बताया हो कि, 'चंदूभाई आए हैं' और हम खाना खा रहे हों, उस समय यदि याद आए न आपकी, तो हम कहते हैं कि, 'थोड़ी देर बाद आना। अभी खाना खा लेने दो।' वह तो, आप आए, वह तो भूतकाल हो गया। यानी कि हम वर्तमान में रहते हैं। यह भोजन आया हो न... हाफूस के आम, आराम से खाते हैं! खाना थोड़ा सा, लेकिन चबा-चबाकर...

प्रश्नकर्ता : उपयोग पूर्वक।

दादाश्री : उसके अलावा कुछ और नहीं, वर्तमान में ही। हम वर्तमान में रहते हैं। इसलिए लोग कहते हैं, 'दादा, आप टेन्शन रहित हैं!' मैंने कहा, 'टेन्शन किस चीज़ का, भाई'? वर्तमान में रहे तो टेन्शन हो सकता है क्या? टेन्शन तो, जो भूतकाल में खो जाता है उसे होता है। भविष्य का पागलपन करे, उसे होता है, हमें क्या टेन्शन? मैंने आपको वही पद दिया है। दिया है या नहीं दिया?

प्रश्नकर्ता : दिया है न! व्यवस्थित पूरी तरह से यदि समझ में आ जाए तो फिर कोई टेन्शन है ही नहीं।

दादाश्री : समझने की ही ज़रूरत है। भगवान ने क्या कहा है? वर्तमान में रहने को कहा है। भूतकाल तो चला गया और वर्तमान में रहना है। वर्तमान में रह सकते हैं या नहीं रह सकते?

प्रश्नकर्ता : रह सकते हैं।

दादाश्री : वर्तमान में रहते हैं, उसे 'ज्ञानी' कहा है भगवान ने! जबकि अज्ञानी भविष्य काल में रहते हैं या फिर भूतकाल में रहते हैं, वर्तमान काल में नहीं रहते कभी भी! यहाँ भोजन करते समय वह न जाने कहाँ गया होता है? आपके ताबे में क्या बताया है? वर्तमान काल। वर्तमान में बरते सदा, सो ज्ञानी जगमांही! अर्थात् निरंतर वर्तमान में बरतते रहते हैं! यानी मैं वर्तमान में रहता हूँ और आपको वर्तमान में रहना सिखाता हूँ। इसमें कोई हर्ज है? और फिर नियम से है।

वीतराग, वर्तमान में एक पुद्गल को देखते थे

प्रश्नकर्ता : आपने जो कहा न अभी, वर्तमान में बरते, सो भगवान जगमांही, वीतराग जगमांही, उसमें सारा हल आ गया।

दादाश्री : वर्तमान में बरते तो सारा शुद्ध उपयोग में ही आ जाता है। और भगवान महावीर क्या करते थे? भगवान महावीर सिर्फ यही करते थे। जो खुद का पुद्गल था, उसमें क्या चल रहा है उसे ही देखते थे। एक पुद्गल को ही देखते थे, दूसरा कुछ भी नहीं देखते थे। कैसे सयाने थे वे! जिनकी बात करते ही आनंद होता है!

अतः दो चीज़ें रखनी चाहिए, या तो वर्तमान में बरते, या फिर खुद के पुद्गल को खुद देखे। मैंने आपका आत्मा इतना अधिक शुद्ध कर दिया है कि आप हर प्रकार से खुद के पुद्गल को देख सकते हो।

भगवान तो आत्मा प्राप्त होने के बाद सिर्फ प्रकृति को ही देखा करते थे। प्रकृति का साइन्स देखते रहते थे कि यह साइन्स कैसा है! भगवान अन्य कुछ भी नहीं देखते थे। भगवान तो सिर्फ खुद के पुद्गल (जो पूरण और गलन होता है) को ही देखते थे।

प्रकृति पूरण-गलन स्वभाव की है और

खुद अपूरण-अगलन स्वभाव का है। प्राकृतिक शक्ति का उत्पन्न होना, व्यय होना और आज की शक्ति, वीतराग यह सब देखते थे। इसलिए उन्हें राग उत्पन्न नहीं होता था।

लोगों को 'मैं-तू' दिखाई देता है और 'वीतराग' को सभी ओर शुद्ध चेतन और प्रकृति स्वभाव दिखाई देते हैं।

वीतराग कैसे थे? अंत में उन्होंने क्या देखा? खुद की ही प्रकृति देखी थी। खुद की ही प्रकृति को देखते रहते थे। प्रकृति सीधी चल रही है या टेढ़ी, वही देखते रहते थे। सभी जगह ज्ञाता-द्रष्टा ही रहते थे। औरों की प्रकृति देखने से ही यह संसार खड़ा हो गया है। वीतराग मात्र खुद की ही प्रकृति को देखा करते थे और जिसे देखे बिना चारा ही नहीं है। केवलज्ञान की अंतिम निशानी वही है कि खुद की ही प्रकृति को देखते रहें। अपना ज्ञान अनुपम है, इसलिए सबकुछ हो सके ऐसा है।

वर्तमान में रहें, वही शुद्ध उपयोग

यों तो हर एक की प्रकृति होती है और उस प्रकृति को खपाएँगे तो भगवान हो जाएँगे। वह उस प्रकृति को खपा दे या उस प्रकृति को जाने तो भगवान होने की शुरुआत करता है। बाकी खुद की प्रकृति को खुद जाने तो भगवान होने की शुरुआत हो गई।

अंदर जो आत्मा है, वह तो भगवान ही है। बाहर जो प्रकृति है, उसे वीतराग बनाओ।

'वीतरागता' करने से नहीं सीखी जा सकती, 'वीतरागता' तो देखकर सीखनी है! 'वीतरागता' करने की चीज़ नहीं है, जानने की चीज़ है!

घड़ी भर बाद, एक सेकन्ड बाद भविष्य काल कहा जाता है और सेकन्ड पहले जो हो चुका है, वह भूतकाल हो जाता है। लेकिन हमें

वर्तमान में रहना है। वर्तमान में रहे, उसे अन्य कोई उपयोग रखने की ज़रूरत नहीं है। हाँ, बस। यह सब से बड़ा उपयोग कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में रहना अर्थात् उपयोग में ही आ गया न?

दादाश्री : वर्तमान में रहें, उसे ही उपयोग कहते हैं, वही शुद्ध उपयोग है।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो वास्तविक उपयोग कैसे रखना चाहिए, वह समझाइए।

दादाश्री : पाँच आज्ञा वह वास्तविक उपयोग ही है। सभी में आप शुद्धात्मा देखो। यह फाइल है, ऐसा देखोगे, तभी कहा जाएगा कि शुद्धात्मा देखा या फिर शुद्धात्मा देखोगे तब भी फाइल हो गई। यानी कि ये पाँच आज्ञाएँ ही उपयोग है। इससे फिर अंदर ज्ञान का उपयोग और भी ज़्यादा बढ़ता जाएगा। वास्तविक उपयोग बढ़ता जाएगा, यह बाड़ है उपयोग में रहने के लिए। उपयोग रखे बिना ज्ञान कभी भी बढ़ ही नहीं सकता। शुद्ध उपयोग रहना चाहिए, बस! जितना हो सके उतना, एज़ फॉर एज़ पॉसिबल। उसके लिए फिर रात को चिंता नहीं करनी है, सो जाना है आराम से। मेरा कहना ऐसा है कि रातों को जागने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन हम पुरुष हो चुके हैं इसलिए ज़रा ज़्यादा पुरुषार्थ रखना है, ऐसा निश्चय-निर्णय होना चाहिए कि मुझे अब शुद्ध उपयोग रखना ही है। फिर नहीं रह पाए तो उतनी *निकाली* बाबत है। और हमें कोई हड़बड़ाहट करने की ज़रूरत नहीं है, बदहवास नहीं होना है, मोक्ष सामने से आएगा। हमें वहाँ पर जाने की ज़रूरत नहीं है।

जैसे-जैसे जागृति बढ़ें, वैसे-वैसे वर्तमान बरते

वर्तमान में जो है, वह अपना है। हमें फिल्म देखना है। भूतकाल की फिल्में या भविष्य काल की फिल्में देखना अपना काम नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ऐसा यदि सोचें तो वर्तमान जैसी कोई चीज़ ही नहीं है। वर्तमान किसे कहेंगे, किस क्षण को कहेंगे, वह पकड़ में आए ऐसा भी नहीं है।

दादाश्री : नहीं, है। वर्तमान बहुत सूक्ष्म चीज़ है। इस तरफ भूतकाल और उस तरफ भविष्य काल, इन दोनों के बीच सूक्ष्म भाग में वर्तमान है। उसे अज्ञानी पकड़ ही नहीं सकता, 'ज्ञानी' ही उसे पकड़ सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, परंतु इस तरह साधारण तरीके से पकड़ में आए, ऐसा नहीं है।

दादाश्री : एक ही समय को वर्तमान कहते हैं, उसमें जो बरतता है...

प्रश्नकर्ता : अब, समय की जागृति कहाँ है ?

दादाश्री : नहीं, जागृति भले न हो परंतु उसके मन में भाव है न, तो रह सकता है। जितनी जागृति उतना वर्तमान। लेकिन है तो सही वर्तमान।

प्रश्नकर्ता : है तो सही, जरूर है। और यह वही है, जो है वह।

दादाश्री : जब एक समय को जानते हैं तब व्यवस्थित को जानते हैं और उस केवल को, केवलज्ञान को जानते हैं।

प्रश्नकर्ता : सब को एक साथ ?

दादाश्री : एक साथ सबको।

वर्तमान समझते ही केवलज्ञान हो जाए

यदि हमारे दिए हुए 'व्यवस्थित' को एकज्जेक्ट समझ जाए तो उस तरफ केवलज्ञान हो जाए, ऐसा है। जितना समझ में आएगा और फिट हो जाएगा तो उसके उस तरफ केवलज्ञान सामने आ जाए, ऐसा है। हमारी समझ में फुल (पूर्ण) रूप से आने के बाद में हमने आपको यह दिया है और

यह हमारी कितने ही जन्मों की खोज है! यदि व्यवस्थित न हो तो क्या होगा? लोगों को शांति ही नहीं रहेगी न! कि कल सुबह, भविष्य में क्या होगा, उसके ही विचार आते रहेंगे, क्या होगा?

मैं आपको चाहे कितनी भी लाइन ऑफ डिमार्केशन डाल दूँ, पर रहेगी नहीं न! अभी आपको भय लगता है, कुछ आगे का? आगे का भय लगता है ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : यह व्यवस्थित का जिसे हम ज्ञान देते हैं न, उसे तो भविष्य काल का बिल्कुल भी भय नहीं लगता। और भूतकाल के भय को याद नहीं करते। इसलिए वर्तमान में रहते हैं, वे सभी लोग। तभी तो मैंने कहा, रस-रोटी खा रहें हों तब वर्तमान में रहना है। आपके ऊपर कोई खतरे की घंटी गिरे, ऐसा नहीं है। आप पर नहीं गिरेगी। वह तो जहाँ अज्ञानता है, वहाँ गिरेगी। जहाँ ज्ञान है वहाँ खतरे की घंटी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : अपने लिए तो अब वर्तमान में ही बरतते रहना, वही केवलज्ञान है न ?

दादाश्री : हाँ, केवलज्ञान, इसके अलावा और कुछ नहीं है। भूतकाल का उपयोग नहीं, भविष्य काल का उपयोग नहीं, वर्तमान काल का उपयोग।

हमने अक्रम ज्ञान ऐसा दिया है कि भूतकाल भूल जाओ। भविष्य काल व्यवस्थित के हाथ में सौंप दिया। अब बचा क्या? केवलज्ञान स्वरूप उत्पन्न (प्रकट) हो जाए, हमने आप सभी को) ऐसा ज्ञान दिया है।

वर्तमान में रहे, वह अमरपद

भूतकाल और भविष्य काल से हमें लेना भी नहीं और देना भी नहीं है। सदा वर्तमान में रहना, उसी को ही अमरपद कहते हैं। हम वर्तमान

में ऐसे के ऐसे ही रहते हैं। रात को उठाओ तब भी ऐसे और दिन में उठाओ तब भी ऐसे ही। जब देखो तब ऐसे के ऐसे ही होते हैं। ज्ञानी पुरुष कभी पुराने होते ही नहीं हैं। रोज़ नए के नए, नए के नए, फ़ेश ही लगते रहते हैं। उनकी बात फ़ेश लगती है, उनका वर्तन फ़ेश लगता है, उनका वर्तन मनोहर होता है, वाणी मनोहर होती है, उनका विनय भी मनोहर होता है। मनोहर अर्थात् अपने मन का हरण कर ले, वैसा होता है।

प्रश्नकर्ता : सदैव आनंदकारक।

दादाश्री : हाँ! हृदय को आनंदकारक!

प्रश्नकर्ता : आप हर पल एक नयी अनुभूति देते हैं।

दादाश्री : पंद्रह-पंद्रह सालों से सत्संग में आते हैं, उन महात्माओं से हम कभी फिर पूछते हैं कि 'आपको कल जो दादा थे, वे कभी पुराने नहीं लगते?' तब कहते हैं, 'नहीं, दादा को हमेशा फ़ेश देखते हैं। बाकी सभी चीज़ें पुरानी होती रहती है, ये पुराने नहीं होते, यह बड़ा आश्चर्य है!'

प्रश्नकर्ता : उसका क्या कारण है?

दादाश्री : सबकुछ फ़ेश, यह वाणी भी फ़ेश! जिसे खुद का आत्म आनंद कहते हैं न, वह भी फ़ेश, नए ही प्रकार का! देखने वाले को ऐसा लगता है कि क्या ये बैठे हैं। कोई भगवान भी इनके ऊपरी (बॉस) नहीं है! अब, इसे जगत् 'खुमारी' कहता है। शब्द तो चाहिए न! अब, वास्तव में यह खुमारी नहीं है। परंतु उन्हें ऐसा लगता कि किस प्रकार की खुमारी है!

ज्ञानी को काल, कर्म और माया असर नहीं करते

में क्या कहता हूँ? वर्तमान में रहना सीखो। आपको वर्तमान में रहने के लिए सारे रक्षण दिए हैं। हम बिना रक्षण के रहते हैं।

हममें और आपमें फ़र्क कितना? हमने काल को वश में किया है। लोगों को तो काल खा जाता है। आपको काल को वश करना बाकी है। काल वश में किस तरह होता है? भविष्य काल 'व्यवस्थित' के हाथ में है, भूतकाल तो चला गया। इसलिए वर्तमान में रहो। तब काल वश में होता है।

अब, हम सभी को वर्तमान काल रहता है। यानी वर्तमान को जिसने हाथ में पकड़ लिया उसने काल को हाथ में पकड़ लिया। उसे काल, कर्म और माया असर नहीं करते, निरंतर वर्तमान ही रहता है और वर्तमान में जाग्रत रहना, वह जागृति है।

'हमें' तो हमारा मोक्ष निरंतर बरतता ही रहता है। 'ज्ञानी' को काल, कर्म और माया स्पर्श नहीं करते। द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव और भव से अप्रतिबद्ध रूप से विचरें, वे ज्ञानी।

ज्ञानी के पास वर्तमान योग का पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : किसी योग्य व्यक्ति को आप अपनी शक्तियाँ देकर जाएँगे न?

दादाश्री : परंतु उसके आधार पर आपको क्या बैठे रहना है? वे देकर जाएँ, उसके बजाय तो जब तक हम हैं तब तक काम निकाल लो न! बाद में तो वारिस 'इन्टेलिजेन्शिया' (बुद्धिशाली) होते हैं। वे मूल बात को आगे-पीछे कर देते हैं! इसलिए जब मूल पुरुष हों तब उनसे काम निकाल लेना चाहिए और उसके लिए संसार को एक ओर रख देना चाहिए!

ऐसा 'रियल' कभी ही होता है, वहाँ पर संपूर्ण पद प्राप्त होता है। वहाँ पर सच्ची आज़ादी मिलती है। भगवान भी ऊपरी नहीं, वैसी आज़ादी प्राप्त होती है।

हम ज्ञान देते हैं, फिर वास्तविकता 'ओपन' होती हैं। फिर खुद पुरुष हो जाता है। फिर आपको 'मैं परमात्मा हूँ' ऐसा भान होता है। हम पाप भस्मीभूत करवा देते हैं, दिव्यचक्षु देते हैं, इसलिए फिर सभी में परमात्मा दिखते हैं! अर्थात् ऐसा पद देने के बाद, परमात्मयोग देने के बाद आपको पाँच आज्ञा देते हैं।

पुरुष हुए बगैर पुरुषार्थ हो ही नहीं सकता। जैसे ही जाग्रत हुआ तो खुद की भूलें दिखाई देने लगीं, निष्पक्षपाती रूप से दिखाई देने लगीं। चंदूभाई का हर एक दोष समझने लगते हैं, तब निष्पक्षपातीपन होता है। तब जजमेन्ट पावर आता है और उसके बाद असल पुरुषार्थ होने लगता है। पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ अर्थात् एक बार दहाड़े तो कितने ही शेर और शेरनियाँ भाग जाएँ! परंतु ये तो पिल्ले भी मुँह चाट जाते हैं!

यदि मोक्ष में जाने की कोई भावना होगी, यदि कुछ प्राप्त करने की भावना होगी न, तब वृत्ति उसमें तन्मयाकार रहेगी, यानी कि उस तरफ की तीव्रता होनी चाहिए। तीव्रता अर्थात् खुद का जबरदस्त पुरुषार्थ होना चाहिए।

आपने परमात्मपद, परमात्मसुख सब देखा हुआ है। वह आपके लक्ष में है, वहाँ तक आप वापस फिर असल (वास्तविक) स्टेज में आ जाओगे। अतः फिर से ऐसा योग जमा लो, संसार का जो होना हो, वह हो। 'व्यवस्थित' के ताबे में सबकुछ सौंप देना है, और वर्तमान योग में ही रहना है।

विज्ञान मिलने के बाद एक क्षण भी वर्तमान न चूकें

प्रश्नकर्ता : दादा के पास आने के बाद यह पक्का हो गया है कि अब, ये देहधारी परमात्मा हैं। इसलिए फिर यदि उसका तीव्र पुरुषार्थ होगा तो...

दादाश्री : बस! तो बहुत हो गया। वह छूट जाएगा, अन्य कोई तकलीफ नहीं है, नुकसानदायक नहीं है और संसार चल सके, उसके लिए *ओलंबो* (साहुल, भूलंब) दिया है। वर्ना तब तक संसार चलाने की चिंता रहती थी। लेकिन यह *ओलंबो* दे दिया है कि वह भी व्यवस्थित चला लेगा। सारा कुछ *ओलंबो* सहित दिया है। तो किसी भी तरह की वरीज (चिंता) रखे बिना सबकुछ दे दिया है जबकि क्रमिक मार्ग में तो फिर घर चलाने की परेशानी, बिजनेस चलाने की परेशानी और फिर भविष्य की चिंता। इसमें तो भविष्य की चिंता-विंता कुछ भी नहीं है।

आपका तो भविष्य काल का भय ही चला गया! भविष्य काल का भय नहीं, कितना सरल है! अब, इतनी सरलता में भी काम नहीं निकालें, तो उसकी ही भूल है न! यानी निरंतर वर्तमान काल में रहने के लिए है यह विज्ञान।

भूतकाल को भूल जाएँ, ऐसा नहीं होता, लेकिन भूतकाल को देखो और जानो। क्या याद आता है उसे देखो और जानो, तो वह भूल जाने के समान है। ऐसा करते-करते भूल जाएँगे तब फिर आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, सहज भाव से। तब तक पुरुष को पुरुषार्थ और पराक्रम करना है।

हमें भी वर्तमान का ही दिखाई देता है, अन्य कोई झंझट नहीं और आपको भी ऐसा ही कहते हैं कि भाई, आप वर्तमान में रहो। अब आपको वर्तमान में रहना चाहिए। बस, अपना विज्ञान इतना ही कहता है, 'वर्तमान बर्ते सदा सो ज्ञानी जगमांही'। अतः यह 'ज्ञान' के बाद आपको निरंतर वर्तमान ही होना चाहिए। जिस समय जो संयोग है वहाँ वर्तमान में ही रहना है, एक क्षण भी वर्तमान न जाए।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज

23 नवम्बर (शनि) शाम 5 से 7 - सत्संग और 24 नवम्बर (रवि) शाम 4 से 7-30 - ज्ञानविधि
21 से 28 दिसम्बर सुबह 10 से 12-30, शाम 4-30 से 7 - आप्तवाणी 14 भाग-4 पर सत्संग पारायण
नोट : गुजराती किताब के पेज नंबर 114 से वाचन होगा। (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रांसलेशन उपलब्ध रहेगा।)
29 दिसम्बर (रवि) सुबह 10 से 12-30 - श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा

पालनपुर

27 नवम्बर (बुध) रात 7 से 10 - सत्संग और 28 नवम्बर (गुरु) शाम 6-30 से 10 - ज्ञानविधि
29 नवम्बर (शुक्र) रात 7 से 10 - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : किया मोटर्स के पास वाला मैदान, आबू रोड हाईवे, पालनपुर. संपर्क : 9924916767

अहमदाबाद

6-7 दिसम्बर (शुक्र-शनि) रात 7-30 से 10-30 - सत्संग और 8 दिसम्बर (रवि) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि
स्थल : दिव्यपथ स्कूल के सामने का मैदान, नारणपुरा, अहमदाबाद. संपर्क : 9913757441

सुरेन्द्रनगर

10 और 12 दिसम्बर (मंगल व गुरु) रात 7-30 से 10-30 - आप्तपुत्र सत्संग
11 दिसम्बर (बुध) शाम 7 से 10-30 - ज्ञानविधि
स्थल : एम. पी. शाह आर्ट्स और साईन्स कॉलेज, बस स्टेन्ड रोड, सुरेन्द्रनगर. संपर्क : 9106936482

गांधीधाम

14 दिसम्बर (शनि) रात 7 से 10 - सत्संग और 15 दिसम्बर (रवि) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि
16 दिसम्बर (सोम) रात 7 से 10 - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : डी. पी. टी. ग्राउन्ड, रोटरी सर्कल के पास, टैगोर रोड, गांधीधाम. संपर्क : 9924348844

पुणे में निष्पक्षपाती त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

12 फरवरी (बुध) शाम 5 से 7 - सत्संग
13 फरवरी (गुरु) सुबह 10 से 12-30 - सत्संग और शाम 4-30 से 7 - सत्संग
14 फरवरी (शुक्र) सुबह 9-30 से 12-40 - श्री शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा
शाम 4-30 से 7 - सत्संग
15 फरवरी (शनि) सुबह 9-30 से 12-30 - श्री कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा
शाम 3-30 से 7 - ज्ञानविधि
16 फरवरी (रवि) सुबह 9 से 12-15 - श्री सीमंधर स्वामी मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा
स्थल : त्रिमंदिर, पुणे-बेंगलुरु हाईवे रोड, खेड़ शिवापुर के पास, वरवे बीके, पुणे, महाराष्ट्र.
संपर्क : 7218473468, 9425643302

सूचना : पांच दिवसीय प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में (टेंट में) रहने की और भोजन की सुविधा निःशुल्क रहेगी। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी Akonnect ऐप के द्वारा दी जाएगी।

वॉलिंगॉन (ऑस्ट्रेलिया) : सत्संग शिविर : ता. 22 से 24 सितम्बर 2024



ऑकलेन्ड (न्यूजीलेन्ड) : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 1 से 3 अक्टूबर 2024



अडालज : नवरात्रि महोत्सव : ता. 3 से 12 अक्टूबर 2024



नवम्बर 2024
वर्ष - 20 अंक - 1
अखंड क्रमांक - 229

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

वर्तमान में रहे तो टेन्शन मुक्त रह सकते हैं

हम हमेशा वर्तमान में रहते हैं। वर्तमान में रहे तो टेन्शन हो सकता है क्या? टेन्शन तो, जो भूतकाल में खो जाता है उसे होता है या भविष्य का पागलपन करे, उसे होता है, हमें क्या टेन्शन? व्यवस्थित पूरी तरह से यदि समझ में आ जाए, तो फिर कोई टेन्शन है ही नहीं। वर्तमान में रहते हैं, उसे 'ज्ञानी' कहा है भगवान ने! अज्ञानी भविष्य काल में रहते हैं या फिर भूतकाल में रहते हैं, वर्तमान काल में नहीं रहते कभी भी! यहाँ भोजन करते समय वह तो (चित्त से) न जाने कहाँ गया होता है? आपके ताबे में क्या बताया है? वर्तमान काल। वर्तमान में चरते सदा, सो ज्ञानी जगमांही! अर्थात् निरंतर वर्तमान में चरतते रहते हैं! यानी मैं वर्तमान में रहता हूँ और आपको वर्तमान में रहना सिखाता हूँ। इसमें कोई हर्ज है? और फिर नियम से है। भगवान ने क्या कहा है? वर्तमान में रहने को कहा है।

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kaloj, Dist. Gandhinagar - 382729.